प्रथम अध्याय

"सुरेंद्र वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।"

" सुरेंद्र वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व। "

प्रस्तावना : व्यक्ति की जानने की आंतरिक जिज्ञासा सदासेही अनुसंधान का काम करती हैं। इसी विशेषता के कारण लेखक का जन्म होता है। लेखक अपनी प्रतिभाशक्ती से जीवन के अनुभवोंको समेटकर, तो कभी लोगोंके जीवन से प्रभावित होकर उन सत्य-काल्पनिक, प्राचीन-आधुनिक घटनाओं को साकार रूपमें परिणत करने का सफल प्रयास अपने साहित्य के निर्माण द्वारा करता है।

लेखक के पास यही पूँजी होती है। जिसके बलबुतेपर सर्वसामान्य जनताभी उनसे अछूती नही रहती, प्रभावित हो उठती है। उसेभी कहींन कहींपर अपना अस्तित्व नजर आता है। जीवन की सच्चाई को वह पढकर, तो कभी आँखोसे देखकर प्रभावित होता है। यही प्रभाव जिस व्यक्ति के कारण सर्वसामान्य जन पर पडता है, वह व्यक्ति सोच-विचार में ओरोंसे हटके असामान्यमें जाना जाने लगता है।

ऐसे ही व्यक्ति है, 'सुरेंद्र वर्माजी' जिन्होंने बहुत कम समय में हिंदी नाट्यसाहित्य में उथलपुथल मचाने का काम किया।

स्त्री-पुरूष के संबंधो के बदलते रूपको उन्होंने बहुत करीबसे जाना।

कोई भी लेखक जब कभी कई किताबें, नया साहित्य पढता है। उसके मस्तिष्क में उन बातोंका, उन घटनाओंका गहरा प्रभाव पडता है। इसे लिखकर लेखक अपनी प्रेरणा को प्रतिभाशक्ती के द्वारा प्रस्तुत करता है। अमुल्य साहित्यका निर्माण करके वह हर एक के दिलोंपर छाँ जाता है। ऐसा ही सुरेंद्र वर्माजी द्वारा लिखित साहित्य हिंदीसाहित्यमें मील के पत्थर का काम कर रहा है।

लेखक द्वारा बेजोड साहित्य का निर्माण तभी होता है, जब वह विषय उसे झकझोर नहीं डालता।

साहित्यकार का मुख्य कर्तव्य यह है की वह समाज का पथ प्रदर्शन करें। उसे सही रास्ता दिखाए। यह दायित्व ही उससे श्रेष्ठ साहित्य का सृजन करवा देता है।

1.1 " सृजनशील साहित्यकार - सुरेंद्र वर्मा "

सुरेंद्र वर्मा का व्यक्तित्व ओरोसे अलग बहुआयामी प्रतिभासंपन्न है। विशेषत: वे नाटककार के रूपमें पूर्णरूपसे हावी जान पडते है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में और विशेषतौर से साठोत्तरी हिंदी नाटककारों में उनका एक विशिष्ट स्थान है। उनका साहित्य नए प्रयोगों से प्रभावित होता दिखाई देता है। इसी लिए उनकी ख्याति एक प्रयोगशील नाटककार के रूपमें जानी जाती है। उन्होंने अपने लेखन साहित्य में नाटक के साथ एकांकी, उपन्यास, कहानीसंग्रह, रूपांतर तथा व्यंगविषयक का भी सृजन किया है। काव्यक्षेत्र में एक कवि के रूप में भी उनका महत्वपूर्ण स्थान विद्यमान है। सुरेंद्र वर्मा का व्यक्तित्व बहुमुखी है। वे उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, व्यंग्यकार, कवि और एक अच्छे-खांसे समीक्षक के रूप में प्रसिध्द है।

सुरेंद्र वर्माने अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक जीवन के यथार्थ का साक्षात्कार करने का सफल प्रयास किया है। सामायिक युग की विसंगतियों के संघर्षमें टूटते बिखरते मनुष्यके मानसिक विघटन को ऐतिहासिक-पौराणिक संदर्भों के माध्यम से मुखरित किया। वर्तमान युग की ज्वलंत समस्याओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया है।

समाज में व्याप्त बुराईयाँ, प्राचीन परंपरा, प्रथा एवं रूढियाँ, साहित्यकारों की स्वतंत्रता का हनन-पतन, समाज में फैली अश्लीलता,

नैतिकता का ऱ्हास तथा भौतिक सुख-सुविधाओं की अदम्य लालसा में मध्यवर्ग का चित्रण उनके साहित्य में स्पष्टतासे दिखाई देता है। उनका लिखित साहित्य समाज-जीवन की सच्चाई से अवगत कराता है। नाटककार की सृजनशीलता उनके नाटकों के माध्यमसे बलवती बनी हूई लक्षित है।

साहित्य की विविध विधा के जरिए उन्होने सृजनशील साहित्यका परिचय दिया है।

1.2 जन्म :

आधुनिक हिंदी इनेगिने नाटककारों में सुरेंद्र वर्माजी का विशिष्ट स्थान है। उनका जन्म 7 सितंबर 1941 में हुआ।

1.3 शिक्षा :

उन्होंने भाषाविज्ञान में एम. ए. किया हैं। प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, रंगमंच तथा फिल्मों में भी उनकी गहरी रूचि रही है।

1.4 नौकरी :

आज भी सुरेंद्र वर्मा अध्यापकीय-प्रशासकीय कार्य में कार्यरत हैं।

1.5 " नाटककार : सुरेंद्र वर्मा "

आधुनिक हिंदी नाट्यजगत् की प्रथमश्रृंखला में सुरेंद्र वर्मा की नाट्यकृतियाँ प्रमुख स्थान की अधिकारी है। नाटककार सुरेंद्र वर्माका व्यक्तित्व साहित्यकार सुरेंद्र वर्मापर पूर्णरूप से हावी है। यह बात इनके बहुचर्चित एवं बहुमंचित नाटकोंसे ज्ञात होती है।

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में प्रसाद से मोहन राकेश तक चली आ रही, ऐतिहासिक तथा काव्यात्मक अभिव्यंजना का निर्वाह है।

इतना ही नहीं साथ ही रंगमंच के क्षेत्र में अभिनव प्रयोगोंद्वारा सुरेंद्र वर्मा नाटकोंको सार्थक जीवंतता प्रदान करते चले जा रहे है। है। संक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक जीवन की व्याख्या करना ही उनका उद्देश्य है।

उन्होने अपने पूर्ववर्ती नाटककारों की परंपरा का एक सीमा तक निर्वाह किया है। नव्य-नाटक लेखन में वास्तव में सुरेंद्रजी अपनी विशिष्ट पहचान रखते है। नाटकके साथ सुरेंद्र वर्माजीने एकांकियों द्वारा समकालीन जीवनमें लगातार होनेवाले मूल्योंके विघटन, पारिवारिक और सामाजिक तनावोंसे टूटते व्यक्ति एवं परिवर्तित काम संबंधों को दिखाने का प्रयास किया है।

सुरेंद्र वर्मा एक साथ नाटककार भी है, निर्देशक भी तथा अभिनय भी कर लेते हैं।

वर्तमान संदर्भ में सुरेंद्र वर्मा उन विशिष्ट नाटककारोंमें आते है। जिन्होनें बहुत कम समयमें ही अपने नाटकों और एकांकियो द्वारा हिंदी रंगमंच को नयी मौलिक पध्दतियों और प्रभावोंसे समृध्द किया और रंगान्दोलन के लिए एक सशक्त आधार प्रस्तुत किया।

उनका कहना है कि, " मैं उन्हीं चीजों के बारेमें लिख सकता हूँ। जो मुझे उद्वेलित करती है, वे किसके लिए हैं यह जानना मेरे लिए मुश्किल है। ... शायद यह उतना महत्वपूर्ण भी नहीं। " [1]

सुरेंद्र वर्मा का स्पष्ट कथन हैं की " मैं आशावादी हूँ। अभी इस प्रकार के नाटक होने दीजीए - इससे जनता की रूचि का भी परिष्कार और संस्कार होगा।" [2]

नाटकके बारेमें उनकी मान्यता है की नाटक एक ओर लेखक के मंतव्य का संप्रेषण करता है। दुसरी ओर उसके नाट्यात्मक व्यक्तित्व के प्रशिक्षण में गहरी और ठोस सहायता पहूँचाता है।

सुरेंद्र वर्मा के नाटकोंमें इतिहास को दोहराया नहीं है, वरन उसके भीतर से आधुनिक संवेदना को समकालीन जीवनके कुछ

सार्थक पक्षों की अभिव्यक्ति की है। उन्होंने व्यापक अनुभव क्षेत्र को लेकर नाटक को गतिशीलता प्रदान की है।

जहाँ पर राकेशजी के नाटक की कथावस्तु मौन, कमजोर महसूस होती दिखाई देती है। वहाँ पर सुरेंद्र वर्माने अपने नाटकों में नई जान डालकर, नाटकके कथ्य को समर्थ एवं प्रभावशाली बनाया है।

नाटक केवल काल्पनिकता को आगे बढाता है। ऐसी बात नहीं, यथार्थ जीवन को परदे पर चित्रित कर उसमें वास्तविक जीवनकी आधुनिक, पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से उत्पन्न होती, नई समस्या को भी उद्घाटित करता है।

महानगरीय जीवन का लेखा जोखा एक विशाल पृष्ठभूमिपर सुरेंद्र वर्माजीने नए प्रतीकों, मिथकीय प्रयोगोंद्वारा प्रस्तुत किया है।

नई दृष्टि, नई समष्टि के निर्माण में वर्माजी की साहित्य रचना सच्चे अर्थों में कुछ नया और अच्छापन लाना चाहती है।

1.6 " सुरेंद्र वर्मा : साहित्य का परिचय। "

सुरेंद्र वर्माजी की साहित्य की प्रत्येक विधासे उनकी सृजनता परिचय हमें प्राप्त होता है। सुरेंद्र वर्मा की सफलता का राज उनका अथक परिश्रम है।

उन्होने साहित्य सृजन को अपना धर्म माना है और उसके प्रति वे पूर्ण एकनिष्ट भाव से रहे हैं। उनमें साहित्य रचना की प्रेरणा व्यक्ति और समाज के यथार्थ चित्रण से स्पष्ट दिखाई देती है।

सुरेंद्र वर्माने सन 1960 से लेकर अबतक के साहित्य निर्माण में दस नाटक, तीन उपन्यास, छः एकांकी, दो कहानी संग्रह, एक व्यंग्य, दो समीक्षात्मक लेख, एक काव्यसंग्रह, और इनके साथ-साथ कई फूटकल कहानियाँ लिखी है।

जो समय-समयपर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती जा रही हैं। इस प्रकार की साहित्य रचना के द्वारा हिंदी साहित्य को समृध्द करनेमें अपना महत्वपूर्ण योगदान है।

अपनी साहित्य सेवासे उन्होने जीवन के यथार्थ का साक्षात्कार कर दिखाया है और हिंदी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करने में वे सफल हो गये हैं।

सुरेंद्र वर्माकी प्रकाशित रचनाएँ निम्नप्रकारसे है।

1.6.1 नाट्य-साहित्य:-

1) तीन नाटक (सन 1972)
   1. सेतुबंध
   2. नायक खलनायक विदूषक
   3. द्रौपदी
2) सूर्य की अंतिम किरणसे सूर्यकी पहली किरणतक (सन 1975)
3) आँठवा सर्ग (सन 1976)
4) छोटे सैयद बडे सैयद (सन 1981)
5) एक दूनी एक (सन 1987)
6) एडिथ होम
7) शकुंतला की अंगूठी (सन 1987)
8) कैद-ए-ह्यात

प्रस्तूत नाटक के विषय हिंदी नाट्य के लिए एकदम अछूते और नये लगते है। इस तरह उनके संपूर्ण नाटक निजी रचनात्मकता की विशेषता रखते है।

वर्माजीने मानवीय स्थितियों के सूक्ष्मतर मन:स्थितियों की परतों को खोलनेका काम किया है। वे फिल्म को नाटक से अधिक प्रभावशाली माध्यम मानते है। उनकी दृष्टीसे आज नाटक की अपेक्षा फिल्म अधिक प्रभावी माध्यम है। क्योंकी हर व्यक्ति फिल्म को आसानीसे देख सकता है। उसे नाटक देखने में अनेकसी कठिनाईयाँ आती है।

वस्तुत: सुरेंद्र वर्मा के सभी नाटक उनकी प्रयोगशीलता के कारण बडे रोचक, बहुचर्चित रहे है। इसीलिए सुरेंद्र वर्मा के नाटकमें आज की समस्य को जाना जाता है।

उनके नाटकोंद्वारा बढती समस्याओं को, ऐतिहासिक और आधुनिक दृष्टीकोनसे समझा जा सकता है।

1.6.2 एकांकी - साहित्य :-

1) नींद क्यों रातभर नहीं आती (एकांकी संग्रह) (प्रकाशित वर्ष सन 1976-1981)

1. शनिवार के दो बजे
2. वे नाक से बोलते हैं
3. हरीघासपर घंटेभर
4. मरणोपरांत
5. नींद क्यों रातभर नहीं आती
6. हिंडोल इंगूर

प्रस्तूत एकांकी संग्रह में यह छ: एकांकियाँ नाटकीय प्रयोगोंद्वारा समकालीन जीवन में लगातार होने वाले मूल्योंके विघटन, पारिवारिक और सामाजिक तनावोंसे टूटते व्यक्ति और परिवर्तित काम संबंधों के चित्रण का उदाहरण है। यह एकांकियाँ सामाजिक भी है और यथार्थवादी शैली की भी।

इन एकांकियों में अनुभव का क्षेत्र स्त्री-पुरूष संबंधोंकी गहराइयों को स्पर्श करता जाता है।

वर्माजीने बहुत कम समयमें नाटकों और एकांकियों द्वारा हिंदी रंगमंच को नयी मौलिक पध्दतीयों और प्रभावोंसे समृध्द किया। इन एकांकियों का तथ्य आक्रामक जान पडता है।

1.6.3 कहानी साहित्य :-

सुरेंद्र वर्मा का कहानी साहित्य उनके नाटक साहित्य की भाँति ही सफल एवं समृध्द है। उनकी कहानी के विषय और शिल्प में मौलिकता है जिसके कारण वह गरिमामय हो गई हैं। कहानियों का निर्माण किसी विशिष्ट उद्देश्य को सामने रखकर हुआ है। वस्तुत: उनकी कहानियाँ उनके विचार और भावनाओं का परिणाम है। सुरेंद्र वर्मा की लगभग समस्त कहानियों से वर्तमान एवं ऐतिहासिक कालखंड के समाज जीवन का जीवंत चित्रण देखने के लिए मिलती है।

सुरेंद्र वर्मा की समस्त कहानियाँ कहानी संग्रहों की सहायता से प्राप्त होती है -

1) प्यार की बातें

2) कितना सुंदर जोडा (सन 1974)

1.6.4 उपन्यास - साहित्य :-

सुरेंद्र वर्माका उपन्यास क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका उपन्यास साहित्य उनके जीव-जगत् परिस्थितियों, संस्कारों एवं विविध मनोदशाओं के अतिरिक्त तत्कालीन सामाजिक अवस्थासे प्रभावित हो कर निर्मित हुआ है।

सुरेंद्र वर्माने अपने साहित्य संसार में तीन उपन्यासों की निर्मिती की है।

1) अँधेरे मे परे

2) दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता (सन 1980)

3) मुझे चॉद चाहिए

1.6.5 व्यंग्य साहित्य :-

1) जहाँ बारिश न हो / जहाँ कोशिश न हो

व्यंग्य रचनाएँ उद्देश्य और शैली दोनों की दृष्टियों से उच्चतर साहित्य के अनुकूल है। आज समाज व्यवस्था और शासनतंत्र शुरू से लेकर अबतक भ्रष्ट, कलुषित अमानुषिक है ऐसी स्थिती में उनपर व्यंग्य साहित्य के द्वारा उनका काला चिठ्ठा जनता तक पहूँचाया जा सकता है, जो प्रभावी साहित्य है।

व्यंग्य लेखक का अपना एक विशिष्ट क्षेत्र होता है। यह साहित्य की परिधि में आता है। वह व्यंग्य अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करता है। उसके लेखन में गंभीरता अधिक होती है। सुरेंद्र वर्मा इसी प्रकार के लेखक है। अत: उनकी प्रत्येक रचना से गंभीरता का व्यंग्य झलकता है।

1.6.6 रूपांतर साहित्य :-

1) बिल्ली चली पहनकर जूते

1.6.7 कविता संग्रह :-

1) अस्वीकृत सूर्य

कवि और उसके काव्य का विवेचन और मूल्यांकन कई स्तरोंपर किया जा सकता है। हिंदी के आधुनिक युग के कुछ वरिष्ठ कवियोंके संबंधमें हिंदी समीक्षकोने जो विवेचन किया है। उनके फल स्वरूप उन कवियोंकी एक विशिष्ट मान रेखा हिंदी साहित्य में बन चुकी है। कवि सुरेंद्र वर्मा के काव्य के संबंध में भी युगीन समीक्षकों की प्रतिक्रियाएँ बहुत कुछ यही है की सुरेंद्र वर्मा का कवि व्यक्तित्व बहुमुखी है। "अज्ञेय" के "नया प्रतीक" में सुरेंद्र वर्म की कविताओं को स्थान मिला है।

1.6.8 अन्य साहित्य :-

उपर्युक्त साहित्य के अलावा वे अच्छे समीक्षक भी है। 'प्रकर', 'नटरंग' और 'आजकल' में समय-समय पर कविताएँ, नाटक और लेख छपते रहे है। उन्होंने अन्य साहित्यिक विधाओंपर भी अपनी लेखनी चलायी है।

'सुभाष देशोत्तर का मृत्युबोध' और 'देवराज' के काव्य में 'मानवतावादी दृष्टी' आदि समीक्षात्मक लेखों में उनका समीक्षक रूप उभर उठा है। उन्होंने कई फुटकल कहानियाँ लिखी है जो समय-समयपर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती जा रही है। गांधीजी के विचारों पर ग्रंथ, नीतिशास्त्र पर पुस्तक आदि साहित्यिक विधा में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि, सुरेंद्र वर्मा साठोत्तरी नाटककारों में नयी श्रृंखला के युवा प्रयोगशील नाटककार और निर्देशक के रूप में विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। उनके नाटक और एकांकी हिंदी साहित्य को नये क्षितिज प्रदान करते है।

स्त्री-पुरूष संबंधों के सुक्ष्म भावों को नाटको और एब्कांकियों द्वारा व्यापक अनुभव से प्रस्तुत किया है। सभी विधाओंमें उनका कार्य सराहनीय रहा है। उनके साहित्य में हमें जीवन की अनेक समस्याओं का और सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण दिखायी देता है।

उनका साहित्य सहजता से जनसामान्य को प्रभावित करके छोडता है।अन्त: उनका व्यक्तित्व बहुआयामी और साहित्य बहुचर्चित है।

संदर्भ :-

1. अभिनय विशेषांक : साक्षात्कार : जयदेव तनेजा पृ. 20

2. वही पृ. 20